रूसी परी कथा

नन्ही हावरोशेका

चित्र: ओ. कोरोटकोवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

दुनिया में बहुत से अच्छे लोग होते हैं लेकिन कुछ लोग अच्छे नहीं होते हैं. कुछ लोग बड़े दुष्ट और बेशर्म होते हैं.

नन्ही हावरोशेका का दुर्भाग्य यह था कि वह ऐसे ही लोगों के साथ फंस गई थी. वो एक अनाथ थी और जिन लोगों ने उसे अपने पास रखा और उसका पालन-पोषण किया वे उससे जी-तोड़ काम करवाते थे. हावरोशेका कताई-बुनाई करती थी और घर का सारा काम करती थी और उसे साथ मे और सभी काम करने पड़ते थे.

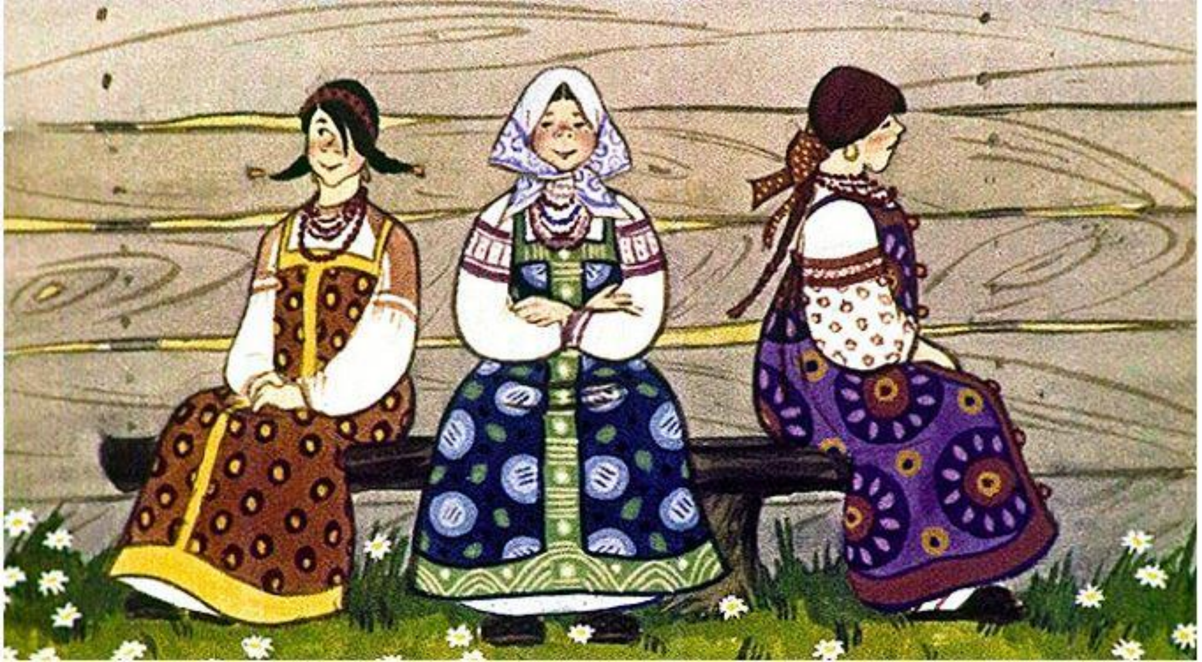

घर मालकिन की तीन बेटियाँ थीं.
सबसे बड़ी को वन-आई, दूसरी को टू-आईज़
और सबसे छोटी को थ्री-आईज़ कहा जाता था.

तीनों बहनें पूरे दिन कुछ नहीं करती थीं. वे दिन भर दरवाज़े के पास बैठकर सड़क पर क्या हो रहा है वो देखती रहती थीं. नन्ही हावरोशेका उनके लिए सिलाई, कताई-बुनाई करती थी लेकिन बदले में उसे कभी भी एक अच्छा शब्द सुनने को नहीं मिलता था.

कभी-कभी नन्ही हावरोशेका मैदान में चली जाती थी. वहां वो अपनी बाँहों को अपनी चितकबरी गाय के गले में डाल देती थी और अपने सारे दुख उसे सुनाती थी.

"मेरी प्रिय गाय," वो कहती. "वे मुझे मारते हैं और डांटते हैं, वे मुझे भरपेट खाने को भी नहीं देते हैं, और मुझे रोने तक नहीं देते हैं. मुझे कल तक पांच पाउंड ब्लीच किया हुआ सन का कपड़ा कातना और थान में लपेटना है."

फिर गाय ने उत्तर में कहा:

"मेरी प्यारी लड़की, तुम्हें केवल मेरे एक कान में चढ़ो और दूसरे कान से बाहर आ जाओ. देखो, तब तक तुम्हारा सब काम हो जाएगा."

और जैसे गाय ने कहा, बिल्कुल वैसा ही हुआ. नन्ही हावरोशेका गाय के एक कान में चढ़ जाती, और दूसरे से बाहर आ जाती थी. और देखते ही देखते वहां तैयार कपड़ा पड़ा होता सारा बुना हुआ, ब्लीच किया हुआ और लपेटा हुआ.

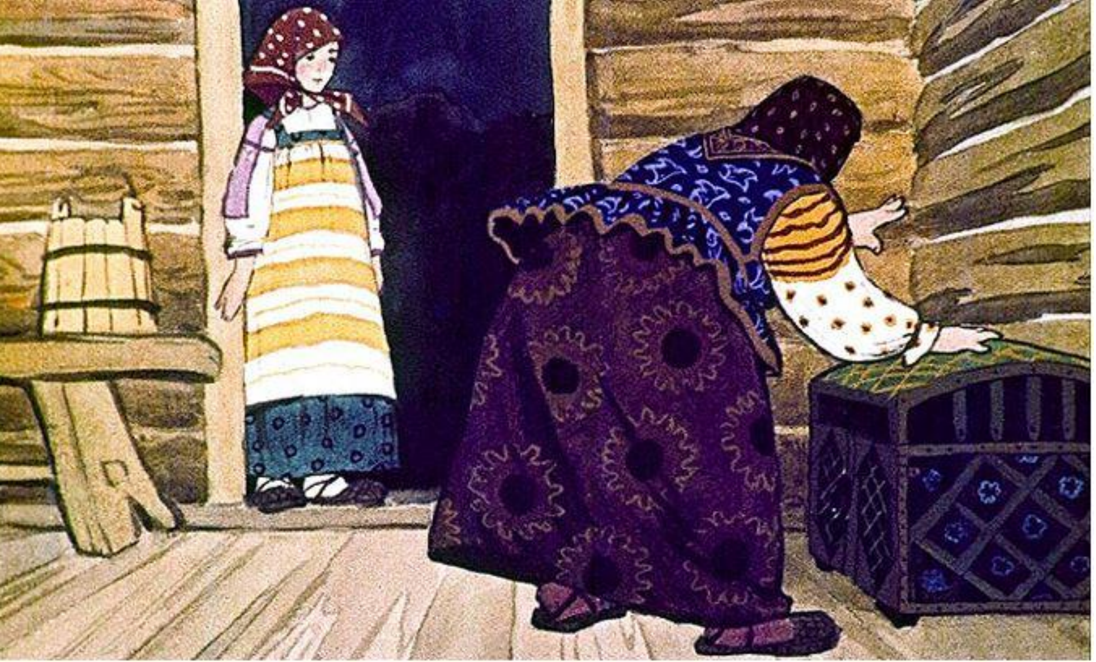

फिर नन्ही हावरोशेका कपड़े के थान को अपनी मालकिन के पास ले जाती, जो उसे देखती और घुरघुराती और उसे एक संदूक में रख देती और फिर नन्ही हावरोशेका को और काम करने को देती थी.

और नन्ही हावरोशेका फिर से अपनी गाय के पास जाती, उसके गले में अपनी बाहें डालती और उसे सहलाती, उसके एक कान में चढ़ती और दूसरे से बाहर आती. फिर वो तैयार कपड़ा उठाती और उसे फिर से अपनी मालकिन के पास ले जाती.

एक दिन बुढ़िया ने अपनी बेटी वन-आई को अपने पास बुलाया और कहा:

"मेरी अच्छी बेटी, मेरी हृष्ट-पुष्ट बच्ची, जाओ और देखो कि उस अनाथ लड़की की उसके काम में कौन मदद करता है. पता लगाओ कि कौन सन कातता है, कौन कपड़ा बुनता और उसे लपेटता है."

वन-आई, नन्ही हावरोशेका के साथ जंगल में गई और वो उसके साथ खेतों में गई, लेकिन वो अपनी मां की बात भूल गई और वो घास पर लेटकर धूप का आनंद लेने लगी.

फिर नन्ही हावरोशेका ने धीमे से कहा:

"छोटी आँख, तुम सो जाओ!"

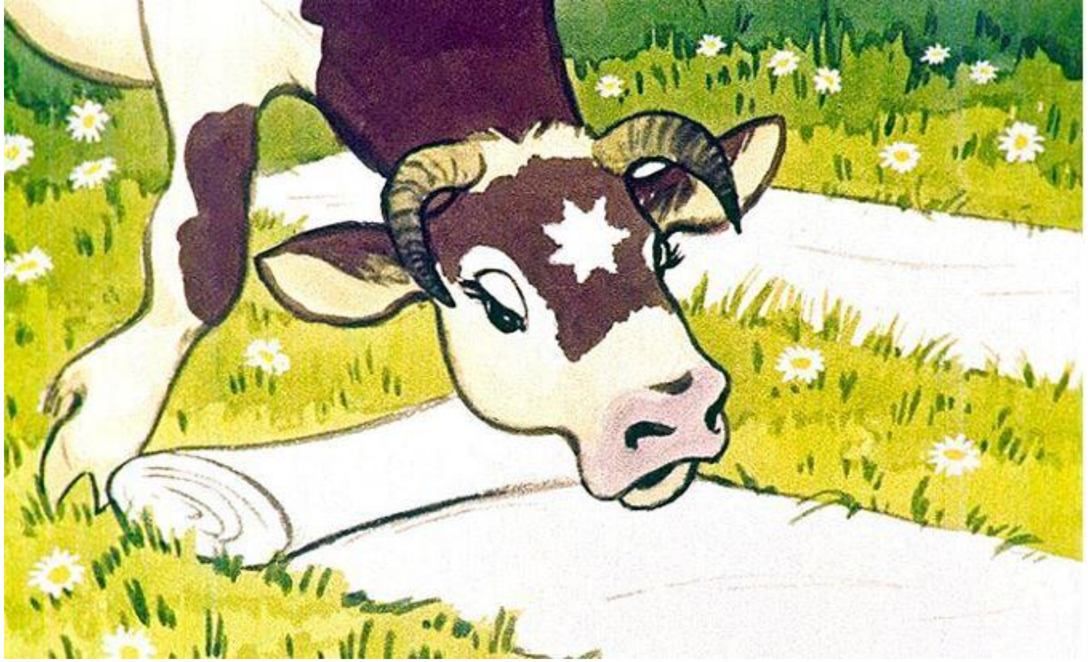

वन-आई ने अपनी आंख बंद कर ली और वो सो गई. जब वो सो रही थी तब तक चितकबरी गाय ने बुना, ब्लीच किया और कपड़े को लपेटा.

बुढ़िया को रहस्य के बारे में कुछ भी पता नहीं चला, इसलिए उसने अपनी दूसरी बेटी टू-आइज़ को बुलाया और उससे कहा:

"मेरी अच्छी बच्ची, मेरी हृष्ट-पुष्ट बच्ची, जाओ और देखो कि कौन उस अनाथ की उसके काम में मदद करता है."

उसके बाद टू-आइज़, नन्ही हावरोशेका के साथ गई, लेकिन वो अपनी मां की बात भूल गई और वो भी घास पर लेटकर धूप का आनंद लेने लगी. फिर नन्ही हावरोशेका बड़बड़ाई:

"नन्ही आँख! सो जाओ, और फिर टू-आईज़ सो गई!"

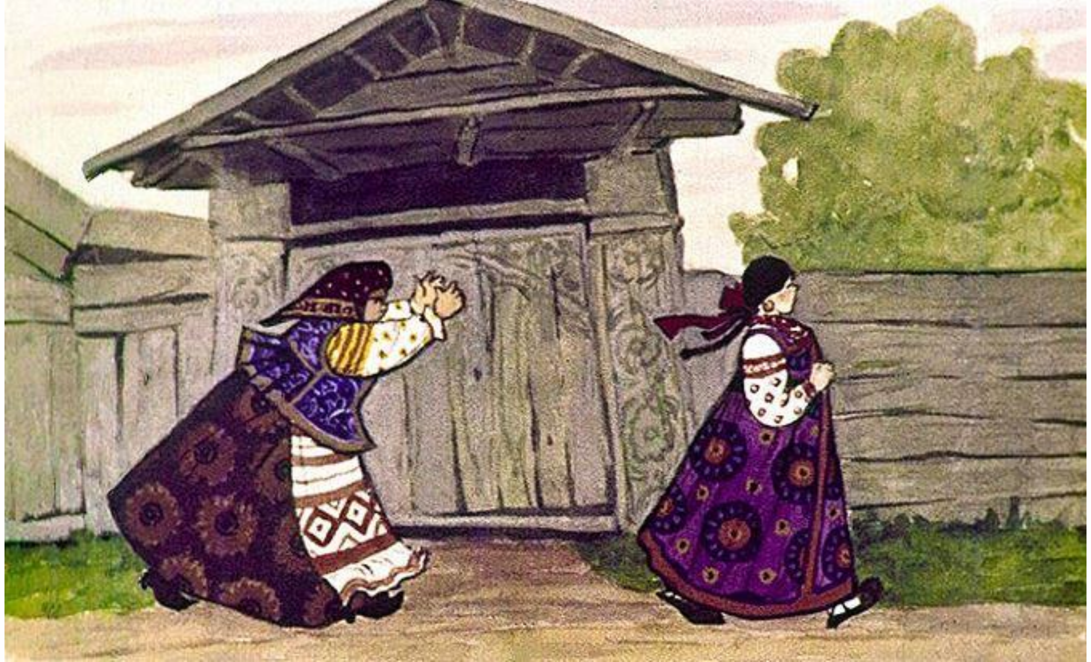

टू-आईज़ ने अपनी आँखें बंद कर लीं और एक झपकी ली. जब वो सो रही थी, तब चितकबरी गाय ने कपड़ा बुना, ब्लीच किया और थान को लपेटा.

बूढ़ी औरत को बहुत गुस्सा आया. फिर तीसरे दिन उसने अपनी तीसरी बेटी - थ्री-आइज़ को नन्ही हावरोशेका के साथ जाने के लिए कहा. उससे पहले मालकिन ने नन्ही हावरोशेका को पहले से कहीं अधिक काम करने को दिया.

श्री-आइज़ धूप में खेलती और उछल-कूद करती रही फिर वो इतनी थक गई कि वो घास पर लेट गई. और फिर नन्ही हावरोशेका ने गाया:

"छोटी आँख! सो जाओ, श्री-आइज़!"

लेकिन वो तीसरी छोटी आंख के बारे में सबकुछ भूल गई.

श्री-आइज़ की दो आँखें सो गईं, लेकिन उसकी तीसरी ने सब कुछ देख लिया. उसने नन्ही हावरोशेका को गाय के एक कान में चढ़ते और दूसरे कान से बाहर निकलते और उसे तैयार कपड़ा उठाते हुए देखा.

थ्री-आइज़ घर आई और उसने अपनी माँ को वो सब कुछ बताया जो उसने देखा था.

बुढ़िया बहुत खुश हुई और अगले ही दिन वो अपने पति के पास गई और उसने कहा:

"जाओ और उस चितकबरी गाय को मार डालो."

बूढ़ा आश्चर्यचकित रह गया और उसने बुढ़िया को समझाने की बहुत कोशिश की.

"क्या तुमने अपनी बुद्धि खो दी है, बुढ़िया?" बूढ़े ने कहा. "वो गाय अच्छी है और अभी जवान है."

"उसे मार डालो और मुझसे एक शब्द ही मत कहो," पत्नी ने ज़ोर देकर कहा.

फिर बूढ़े आदमी ने हार मान ली और अपने चाकू पर धार लगाना शुरू की.

नन्ही हावरोशेका ने वो देखा और फिर वो मैदान में भागी और फिर उसने चितकबरी गाय के गले में अपनी बाहें डाल दीं.

"मेरी प्रिय गाय," उसने कहा, "वे तुम्हें मारना चाहते हैं!"

गाय ने उत्तर दिया:

"शोक मत करो, मेरी सुंदर लड़की, और जो मैं तुमसे कहूँ तुम वही करो. तुम मेरी हड्डियां लेना, उन्हें एक कपड़े में बांधना, फिर उन्हें बगीचे में दफना देना और फिर उन्हें हर दिन पानी देना. मेरा मांस बिल्कुल मत खाना और मुझे कभी मत भूलना."

बूढ़े आदमी ने गाय को मार डाला, और नन्ही हावरोशेका ने वैसा ही किया जैसे चितकबरी गाय ने उससे कहा था. वो भूखी रही, परन्तु उसने मांस को नहीं छुआ, और उसने हड्डियों को बगीचे में गाड़ दिया और हर दिन उन्हें पानी देती रही.

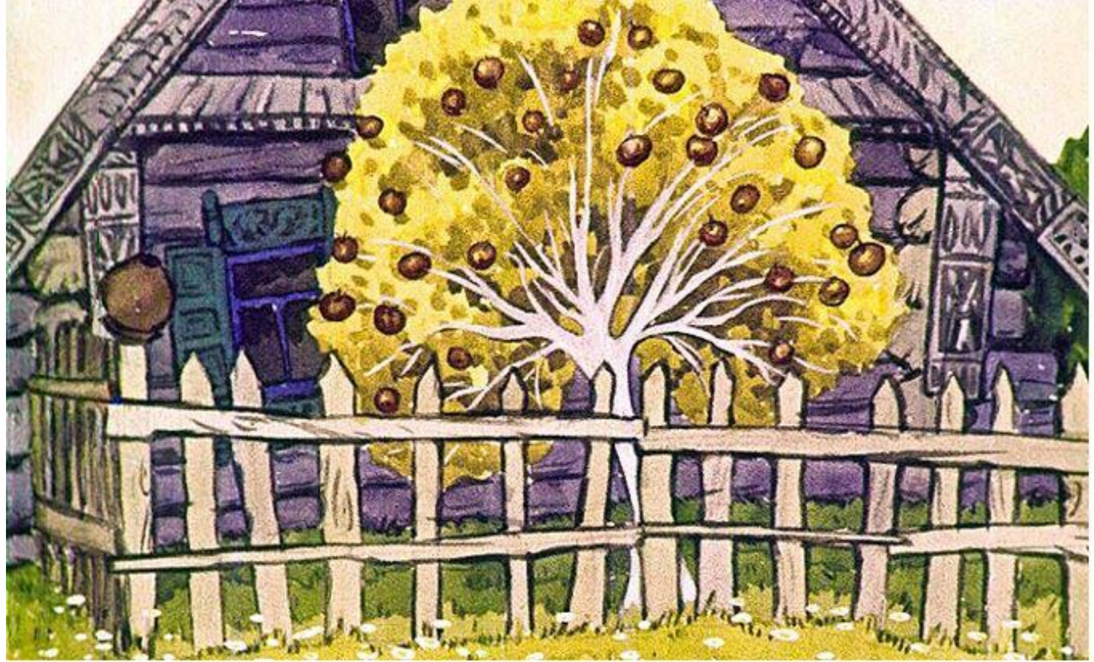

कुछ दिन बाद ज़मीन में से एक सेब का पेड़ निकला, और वो एक अद्भुत पेड़ था! उसके सेब गोल और रसीले थे, उसकी लहराती डालियाँ चाँदी की थीं और उसकी पत्तियाँ सोने की थीं. जो कोई वहाँ से गुज़रता वो रुककर देखता और जो पास आता वह आश्चर्यचकित रह जाता था.

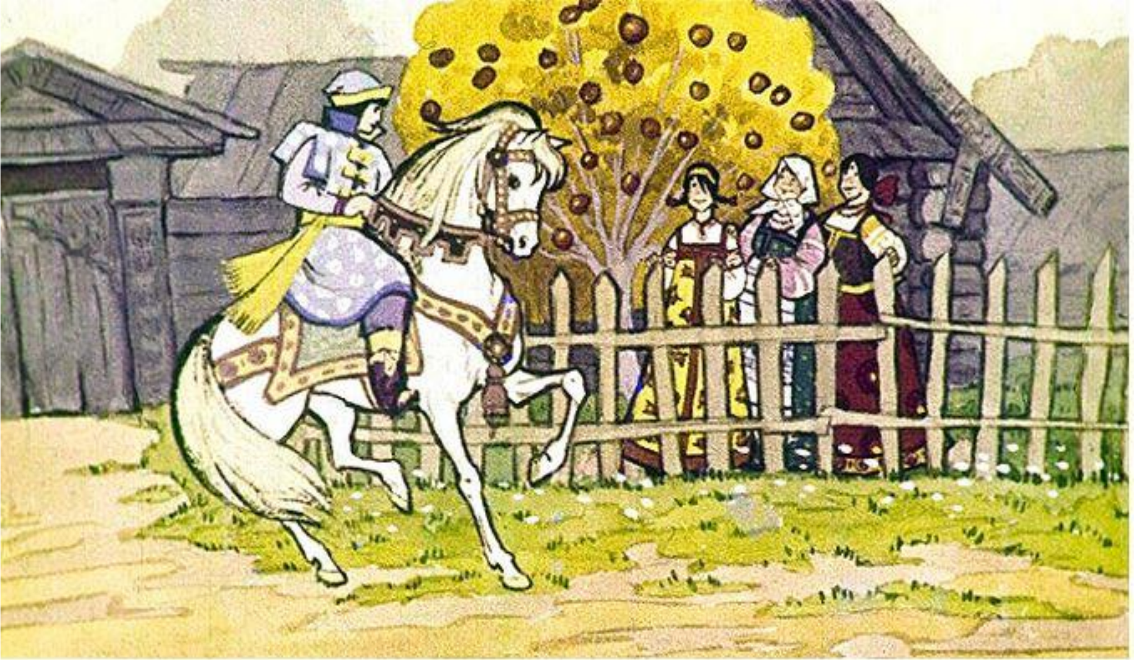

काफी समय बीत गया और फिर एक दिन वन-आई, टू-आईज़ और थ्री-आईज़ बगीचे में घूम रही थीं. और तभी वहां एक युवा, सुंदर और घुंघराले बालों वाला अमीर लड़का घूमने आया. जब उसने रसीले सेब देखे तो वो रुक गया और उसने लड़कियों को चिढ़ाते हुए कहा:

"सुन्दर युवतियों! मैं तुम में से उस युवती से शादी करूंगा जो मेरे लिए उस पेड़ से एक सेब लेकर आएगी."

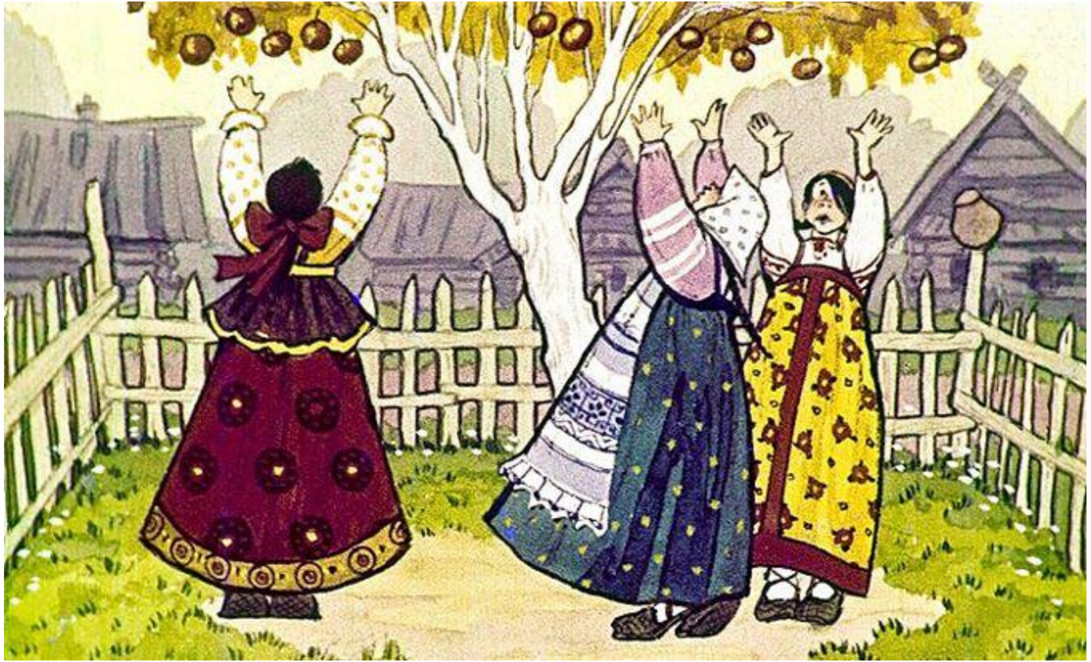

और फिर तीनों बहनें सेब के पेड़ की ओर दौड़ीं, प्रत्येक ने दूसरे से आगे निकलने की कोशिश की.

लेकिन सेब जो बहुत नीचे लटक रहे थे और आसानी से तोड़े जा सकते थे वे बहनों के सिर के ऊपर हवा में उठ गए.

बहनों ने उन्हें गिराने की कोशिश की, लेकिन सिर्फ पत्तियाँ नीचे आकर गिरीं और उन्हें अंधा कर दिया. उन्होंने सेब तोड़ने की कोशिश की, लेकिन टहनियाँ उनकी लटों में फँस गईं और उन्होंने उन्हें गिरा दिया. बहुत कोशिश और संघर्ष करने के बाद भी वे सेबों तक नहीं पहुंच पायीं और उनके हाथों में केवल खरोंचे ही आईं.

फिर नन्ही हावरोशेका पेड़ के पास गई, और तुरंत पेड़ की शाखाएं नीचे झुक गईं और सेब उसके हाथों में आ गए.

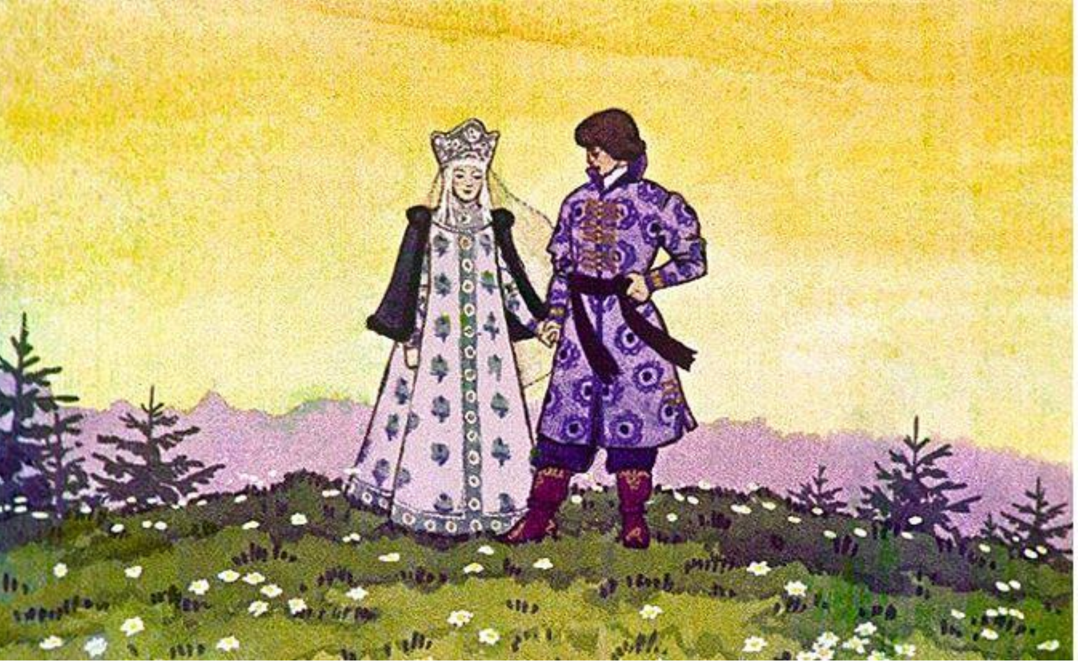

नन्ही हावरोशेका ने उस खूबसूरत युवा को एक सेब दिया और कुछ ही समय बाद उनकी शादी हुई. उस दिन से नन्ही हावरोशेका को कोई दुःख नहीं हुआ, वो अपने पति के साथ स्वस्थ और प्रसन्नचित्त होकर रहने लगी और साल-दर-साल अमीर होती गई.